

गणेश

आचार्य सानन्द जी

प्रतीकोपासना की कक्षा में आप सबका हार्दिक स्वागत है। जैसा कि आपको विदित है कि पीछे से हम निरन्तर कुछ दिनों से प्रतीकोपासना के अन्दर क्रमशः कुछ प्रतीकों पर विचार करते चले आ रहे हैं उनमें अब तक हमने भगवान शिव के नाम से प्रसिद्ध जो एक चित्र हैं उसमें जो प्रतीक छिपे थे उनपर विचार किया। तदोपरान्त हमने विद्या की देवी सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध जो एक चित्र है, मूर्ति है, उस मूर्ति में जो प्रतीक है उनपर विचार किया और उसी क्रम में आज हम जो विघ्न विनाशक, बुद्धि दाता गणेश जी के रूप में ये जो प्रतीमा आपके सामने दिखाई दे रही है ये जो चित्र हैं इस चित्र में जो प्रतीक हैं उनपर हम विचार करेंगे। इन प्रतीकों पर विचार करने से चिन्तन—मनन करने से एक बात स्पष्ट हो जाती है कि जिन्होंने इनको बनाया है उन्होंने पूजा के उद्देश्य से इनको नहीं बनाया, प्रेरणा के उद्देश्य से इनको बनाया है कि हम इन प्रतीकों से प्रेरणा लेकर अपने जीवन का निर्माण इनके संकेतों के अनुरूप करें न कि हम इनके प्रतीकों को नजरअन्दाज करके इनकी पूजा करें, इनपर अगरबत्ती, दीपक, नैवेद्य, फूल, मिष्ठान चढ़ाएं इनका व्रत, उपवास करें इनके नाम से उन सबके लिए नहीं क्योंकि उन सबसे कोई फायदा नहीं होता, वो पूरी तरह अवैज्ञानिक हैं अच्छी तरह उनपर विचार करने से सारांश ये निकलता है कि उस पूजा से कोई लाभ नहीं जो पूजा आजकल इन प्रतीकों को ईश्वर मानकर करी जा रही है। भगवान शिव के हमने चित्र को और उस चित्र में जो प्रतीक थे उनको समझा तो एक चीज समझ में आई कि मनुष्य अपने जीवन में शिव बन सकता है और उस चित्र का सीधा संकेत यही है कि उस चित्र के अनुरूप हर व्यक्ति बने तो व्यक्ति का उस चित्र के अनुरूप बन जाना ही उसकी पूजा है न कि उसके ऊपर फूल चढ़ाना, मेवा चढ़ाना, मिष्ठान चढ़ाना उसके नाम से उपवास करना, व्रत करना आदि—आदि नहीं है और जो प्रतीक उसमें है उन प्रतीकों के अनुरूप यदि अपने जीवन का निर्माण किया जाए तो ये सब पूजा, जो नैवेद्य, फूल, मावा, मिष्ठान वगैरह—वगैरह व्रत, उपवास करने से जो वो लाभ चाहता है, जिस कामना से ये सब करता है ये सारी कामना ही उस प्रतीमा, उस मूर्ति, उस चित्र के जो शिवजी का चित्र है जो महाराजा कैलाशपति शिवजी महाराज का चित्र है उस चित्र में जो प्रतीक है उन प्रतीकों के अनुरूप अपने जीवन को जीने से वो सारी चीजें उस व्यक्ति

को इसी जीवन में मिल सकती है और बहुत ज्यादा दिन भी नहीं लगेंगे साल दो साल। यहां आदमी सालों पूजा, सेवा, अर्चना, माला आदि करता रहता है रोज जाता है पानी चढ़ाता है, बेल पत्र चढ़ाता है न जाने क्या-क्या लेकिन उसका परिणाम, उसका फल उसे कुछ नहीं मिलता वो अन्य कारणों से, अन्य पुरुषार्थ परिश्रमों से, अन्य कारणों से उसे मिलता है उसको वो इसके साथ में जोड़ लेता है ये उसकी त्रुटि होती है उसको वो समझ नहीं पाता लेकिन यद्यपि वास्तव में शिवजी की, सरस्वती जी की या गणेश जी की पूजा करने से इनके नाम से उपवास करने से उसे सीधा कोई फल नहीं मिलता उसके बदले। लेकिन ये जो प्रतीक हैं इन प्रतीकों में जो संकेत है उन संकेतों के अनुरूप यदि व्यक्ति अपने जीवन का निर्माण करे तो उसे सफल होने से कोई दुनिया में नहीं रोक सकता वो अवश्यमेव सफल होगा। उसके जीवन में सुख, शान्ति आएगी, उसके जीवन में धन, वैभव आएगा, उसके जीवन के अन्दर शक्तियों का, सार्वथ्यों का, वैभवों का सुखों का और शान्ति का अवश्य ही विकास होगा, विस्तार होगा लेकिन कब जब वो पूजा का ढंग इनको खिलाना, पिलाना, नहलाना, धुलाना, व्रत, उपवास, वगैरह-वगैरह को छोड़ करके इनमें जो संकेत प्रतीकात्मक हैं जो इशारे हैं उसको व्यक्ति के जीवन के निर्माण के उन इशारों को, उन संकेतों को समझकर व्यक्ति जब अपने जीवन का निर्माण करता है तो वो अवश्य जीवन में सफल हो जाता है। अवश्य वह जीवन में सफल हो जाता है फिर उसको सफल होने से दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती। जैसे शिवजी महाराज के हमने चित्र पर विचार किया था पीछे आपने देखा भी उनके सिर की गंगा पर विचार किया था, और उनकी जटाओं में जो केश हैं, बाल हैं उनपर विचार किया था कि वो सब उनके मस्तिष्क के विचार हैं और गंगा की भांति सारे विचार पवित्र हैं औषधीय गुण वाले, सबके सुख, सबके कल्याण की भावनाओं से भरे हुए हैं ललाट उनका चन्द्रमा अर्थात् इतना शीतल है कि जब आदमी का मन उसका दिमाग, उसकी बुद्धि शान्त रहती है तो कोई बुरे काम नहीं करता सोच-समझकर करता है, ठीक है। शिव वो व्यक्ति है जो अपने ज्ञानात्मक तीसरे नेत्र से, ज्ञानदृष्टि से अपनी बुराईयों को दूर करता है, जीवन में आजू-बाजू कोई बुराई, कोई संकट कोई ऐसी समस्या कोई ऐसी दुविधा आ जाए तो उसका विवेक पूर्वक समाधान करके उसका हल निकालता है और एक हाथ में डमरू यानी वो उस डमरू के माध्यम से ये बता रहे हैं कि आदमी जन्म और मृत्यु का विचार करता है ताकि वो जीवन में कोई पाप न करें क्योंकि सारे फसाद की जड़ हमारे पापकर्म हैं। पापकर्म किसे कहते हैं राग, द्वेष,

छल, कपट, लोभ, चोरी, जाली, ईर्ष्या, द्वेष ये सारे दुर्गुण यही तो पाप है और जब आदमी इन पाप की मनोवृत्तियों में रहता है तो उसके दिमाग में तनाव तो स्वाभाविक आना है और जब तनाव आएगा तो दुःखी तो रहेगा, शान्त तो रहेगा उसे काम में तो मन लगेगा नहीं पढ़ाई में तो मन लगेगा नहीं वो जीवन से तो भटकेगा उसके जीवन में सुख, शान्ति रहेगी नहीं तो वहां यह कह रहे हैं कि वो अपने जन्म और मृत्यु पर विचार करेगा। तो आदमी की जन्म और मृत्यु पर विचार करने से आदमी की बुद्धि विक्षिप्त होती है वो सोचता-विचारता है कि यार जो अच्छा काम है करने का वही करना चाहिए बे फालतू किसी को परेशान नहीं करना चाहिए खुद भी खुश रहो और सबको खुश रहने दो वो इस दृष्टिकोण पर जीता है। तीसरा जो उनके दूसरे हाथ में जो त्रिशूल था उसके जो तीन शूल थे वो तीन त्रैतवात, आत्मा, परमात्मा, प्रकृति। ये सारा संसार आखिर है क्या प्रकृति की विकृति ये सृष्टि है और विकृति से बने ये सारे शरीर मेरा आपका, सबका इन शरीरों में रहने वाली आत्मा हम सब हैं और इन शरीरों को बनाने वाला, इस संसार को चलाने वाला ये परमात्मा है जब आदमी इन तीनों बिन्दुओं पर विचार करता है तो उसका मन प्रसन्न रहता है उसका हृदय शान्त रहता है वो सारे विश्व को एक ही पिता का परिवार मानकर, एक ही पिता की सन्तानें मानकर भाई बहन बनाकर जीता है। तो जीवन में ठंडक आती है, जीवन में उथल-पुथल शान्त रहती है, जीवन के अन्दर कौतुहल नहीं होता, आदमी भागदौड़ में नहीं रहता, ये कर लूँ, वो कर लूँ दूसरे का जाए जड़ापा, दूसरे का हो सत्यानाश। दूसरे का कुछ भी हो मुझे तो अपना घर भरने से फायदा है। लोग यही तो करते हैं मूर्तियों के मन्दिरों में जा-जाकर भी दूसरों के विनाश की प्रार्थनाएं करते हैं। कई लोग मेरा ये हो जाए बली मांग रहा है भगवान से मेरा ये हो जाए और वो मांग रहा है उस काम को यदि भगवान कर दे तो दूसरे 50 लोगों का अहित हो जाएगा। तो अविवेकपूर्वक प्रार्थना को न भगवान सुनेगा और न ही पूरी करेगा। हाँ वो आदमी जरूर मारकाट कर सकता है कर्म करने में आदमी स्वतन्त्र है। तो हमने भगवान शिव के उस चित्र से समझा था कि शिव महाराज शिव ऐसे उत्तम व्यक्तित्व के जीवन थे कि देखों उसने वैसा जीवन जीया तो हम भी वैसा जीवन जीये। दूसरा हमने सरस्वती पर विचार किया था हर विद्यालय के अन्दर सरस्वती होती है, सरस्वती हर विद्यालय में होती है तो उससे क्या शिक्षा मिलती है कि विद्यार्थी जो विद्यालय में आ रहा है उसका उद्देश्य है विद्या प्राप्त करे। और सरस्वती शब्द का अर्थ था विद्या और वाणी। तो विद्यार्थी जब विद्या

प्राप्त करेगा तो जीवन में हंस बन जाएगा क्योंकि सरस्वती हंस पर बैठती है हंस सरस्वती का वाहन है। विद्यार्थी हंस कब बनता है जब हंस के समान उसका व्यक्तित्व हो जाता है। वो कैसे विद्या को जब विद्यार्थी प्राप्त करता है विद्या उसके दिमाग में बैठती है जैसे हंस के ऊपर सरस्वती बैठी। ये प्रतीक है और विद्यार्थी के मन में जब विद्या बैठ जाती है तो विद्यार्थी उस विद्या के अनुरूप हंस के समान जैसे हंस सागर से मोती चुगता है तो विद्यार्थी संसार में से गुणों का चयन करता है गुण ही मोती है बुराइयों को छोड़ता है, दुर्गुणों को छोड़ता है और दूध-पानी को जैसे हंस अलग कर देता है नीर-क्षीर को उसका विवेक कर लेता है तो वैसे ही विद्यार्थी भी अच्छे-बुरे की पहचान कर देता है। श्रेष्ठता-निकृष्टता की पहचान कर लेता है ज्यादा अच्छे और कम अच्छे और बिल्कुल निम्नतम की पहचान कर लेता है जो उत्तम है उसे ग्रहण कर लेता है जो नहीं है उसे छोड़ देता है। वो हमने विस्तार से पीछे उसपर विचार कर लिया है, ठीक है, तो वो इस प्रकार से कर लिया और विद्यार्थी जब हंस बन जाता है विद्या उसके अन्दर समा जाती है तो उसके व्यक्तित्व में हंस पन आ जाता है। यानि वो अच्छाई-बुराई को समझने लग जाता है वो अपने लिए अच्छे काम करता है दूसरों के लिए अच्छे काम करता है तो अच्छा करने वाला सदा खुश रहता है, प्रसन्न रहता है। तो जब विद्यार्थी विद्या प्राप्त करके विद्वान् बन जाता है तो उसकी वाणी ही सरस्वती की वीणा बन जाती है वीणा को सुनकर शान्ति मिलती है तो विद्वान् के लिए वाणी से जो विचार निकलते हैं उससे आत्मा की समस्याओं के समाधान होते हैं तो ये उस प्रतीक का अर्थ था, ये उस प्रतीक का मतलब था। वहां कहा है भगवती सरस्वती, भगवती कहते हैं भग यानी ऐश्वर्य वाली, वती यानी वाली। भग + वती यानि ऐश्वर्य वाली। ऐश्वर्य सभी प्रकार का आध्यात्मिक ऐश्वर्य, भौतिक ऐश्वर्य, आत्मिक ऐश्वर्य, ठीक है। इनसे समस्त जो जीवन में उपलब्धियां प्राप्त होती है, विभूतियां, विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होता है, वही ऐश्वर्य है और सरस्वती स+ रस+ वती — ये ऐश्वर्य देने वाली भगवती जो भगवती अर्थात् भगवान की ऐश्वर्य देने वाली जो सरस्वती हैं। यानि सरस्वती कौन है भगवान की वाणी। वही रस यानि सुख देने वाली। जो वेद के जो परमात्मा की वेदवाणी है जो उसमें मन्त्र ऋचाएं हैं वही सुख देने वाली, वही वो ऋचाएं, वो वेद मन्त्र वो ज्ञान ही सरस्वती है। वो विद्या ही सरस्वती है और जब वो विद्या उस विद्यार्थी में आ जाती है तो वो विद्यार्थी विद्वान् बन जाता है। तो विद्वान् व्यक्ति के जीवन में दुःख आते ही नहीं क्योंकि वो तमाम प्रकार की अज्ञानताओं से ऊपर उठ जाता है। उसके जीवन

में सारे दुर्गुण, दोष, बुराइयां आते ही नहीं। तो वहां उस विद्यालय के अन्दर छोटे से एक बच्चे को जीवन का इतना बड़ा गुण कैसे समझाया जाए इस बात को समझाने के लिए एक प्रतिमा बनाकर लगा दी। अब लोगों ने विचार किया नहीं, सोचा नहीं, चिन्तन —मनन किया नहीं ये सब कारण से उसको पूजा करना शुरू कर दिया और पण्डितों ने उसे कमाई की एक दुकान बना ली। जैसे शिवजी को बना रखा है, जैसे आपकी सरस्वती माता को बना रखा है, अब बोले की विद्या की देवी पर किसको विद्या देती है, एक बच्चा जो सबसे टॉपर है उस बच्चे को आप उसकी सेवा में लगा तो रात —दिन और जो सबसे ढकोल बच्चा है जिसको कुछ समझ नहीं है याद नहीं होता कुछ नहीं है उस बच्चे पर चार अध्यापक लगा दो पढ़ाने के लिए देखो परीक्षा में कौन पास होता है। जो सरस्वती की पूजा करता है वो पास होता है या रात—दिन जो विद्या को पढ़ता है वो जो विद्या को पढ़ेगा वो पास होगा क्योंकि विद्या ही सरस्वती है तो ये वहां पर विज्ञान था उसकी पूजा का मतलब है पढ़ाई करना, विद्या का अर्जन करना, ज्ञानार्जन करना, यही पूजा है।

अब इन बातों को आधार बनाकर यहां गणेश जी को समझेंगे तो गणेश जी समझ में आयेंगे। यहां पर भी पूजा का कोई मतलब नहीं है कि आप गणेश जी के नाम के लड्डू बांटो तो उससे ये हो जाएगा कुछ नहीं होगा ये सब प्रतीक है और हमारे यही तो दुर्भाग्य की बात है लार्ड मैकाले ने यही तो किया है कि भारत की संस्कृति, भारत की जो गौरवान्वित जो भारत की विचारधारा थी उसने क्या किया कि उस विचारधारा को एक प्रकार से हमारे अन्दर नकारात्मक रूप में प्रस्तुत कर दिया, ठीक है। अब स्वाभाविक बात है धीरे—धीरे उसने वहां पर जो गड़बड़ करी कि हिन्दुओं को मांस खिलाओ ताकि इनका धर्म भ्रष्ट हो हिन्दू नाम यानि आर्य हिन्दू तो हम हैं। हिन्दू तो हमारा कहीं पर नाम भी नहीं है न चाणक्य नीति में हैं, न कौटिल्य अर्थशास्त्र में है, न महाभारत में, न विदुर नीति में है न महाभारत में कहीं पर आता है न रामायण में है, न उपनिषदों में है, न दर्शन शास्त्रों में है न ब्राह्मण ग्रन्थों में है न कहीं व्याकरण के शास्त्रों में है और न कहीं वेदों में है। ये हिन्दू ये एक प्रकार से उनको अपनी संस्कृति से भटकाने के लिए बीच में ये नाम हम पर थोपे गये हैं कि हम सब अपने आपको हिन्दू मानने लग जायें। तो जब हिन्दू मानने लग जायेंगे तो हिन्दू का इतिहास कितना है, हिन्दू का अतीत कितना है तो पीछे जाआगे तो कुछ भी नहीं मिलेगा। आपके 500, 700, 800 साल पहले जाओगे, 1000 साल पहले जाओगे तो

कुछ भी नहीं मिलेगा यहां तक कि किसी महापुरुष की, किसी योग्य विद्वान व्यक्ति की जैसे चाणक्य है और जो महापुरुष हुए हैं उनमें से वराहमिहिर है, वाग्भट्ट है तो आदि किसी की किताब में तो कुछ हिन्दू का अवशेष मिल जाएं कहीं पर भी नहीं मिलेगा क्योंकि यह देश आर्यवृत्त है। देश में रहने वाले लोग आर्य हैं। बाद में राजा भरत के कारण यहां का नाम भारत पड़ गया वो भी संस्कृतनिष्ठ शब्द है। लेकिन हम सब तो आर्य हैं देश पूरा आर्य है यहां के रहने वाले लोग आर्य है लेकिन फिर भी हिन्दू चिपका दिया। ताकि हम अपने गौरव से हम अपने अतीत से हम अपने अतीत की गौरवमयी संस्कृति से दूर होते चले जायें। वैसे तो हम हिन्दू हैं ही नहीं हिन्दू के नाम के अर्थ क्या है पता नहीं आर्य नाम तो संस्कृतनिष्ठ नाम है और उसका नाम श्रेष्ठ बुद्धिमान व्यक्ति होता है। सारे अपने इतिहास में सारे महाभारत सबसे बड़ा इतिहास है वाल्मीकि की रामायण सबसे बड़ा इतिहास है कहीं पर भी नहीं। हाँ आर्य तो सर्वत्र हैं हमारे सारे पूर्वज आर्य थे। तो हम क्यों न आर्य लगाएं। जब थे ही हमारे सारे पूर्वज भारतीय संस्कृति के सारे हमारे अतीत के लोग हमारे बाप—दादा, उनके बाप—दादा, उनके बाप—दादा ऋषि—महर्षि सारे सृष्टि के आरम्भ तक परमात्मा ने वेद में भी कहा अहंददाम्..... मैं इस भूमि को आर्यों को देता हूँ क्योंकि आर्य श्रेष्ठ है इसलिए भूमि श्रेष्ठों को देता हूँ कि इस धरती को वो सुख—शान्ति से भरें, इस धरती पर सबको शान्ति से जीने दें और शान्ति का वातावरण बनाकर रखे लेकिन क्या हो रहा है। तो ये सारा दोष लार्ड मैकाले की पद्धति से फैला हुआ है आज भी हमारे जो ऐसे महान ग्रन्थ हैं उनको कहां स्कूलों में, कॉलेजों में, यूनिवर्सिटियों में, विश्वविद्यालयों में कहां पढ़ाया जाता है। जिन चीजों से इन्सान—इन्सान बनता है वो चीज या तो पढ़ाई नहीं जाती और जिन चीजों से इन्सान राक्षस बन रहा है, इन्सान हैवान बन रहा है, इन्सान दरिन्दा बन रहा है, इन्सान एक—दूसरे का शत्रु बन रहा है, समाज में, राष्ट्र में, परिवार में सब जगह एक प्रकार की तबाही, नकारात्मकाएं, द्वेष, कलह, न जाने किस—किस प्रकार के दुर्गुण फैल रहे हैं ऐसा वातावरण बन रहा है मुझे तो पिछले दिनों बड़ा आश्चर्य हुआ जब वो कौन सी धारा थी 30ए सुनने में आई बोले वो तो पूरी तरह से आप अपने शास्त्र पढ़ा ही नहीं सकते। तो जब हम अपने शास्त्र ही नहीं पढ़ा सकते तो यहां के इन्सान को आप इन्सान कैसे बिना शिक्षा के कोई इन्सान बन सकता है, नहीं बन सकता, देवता बन सकता है, परमात्मा बन सकता है, सभ्य बन सकता है, नहीं बन सकता, वो देखो जंगलों में जो पैदा होते हैं लोग देखें जिनके पास शिक्षा नहीं होती वो पशुओं से

सीखते हैं, पशु एक-दूसरे को मारके खा जाते हैं वैसे ही वो जो जंगल में पैदा होने वाले जंगली लोग हैं वो उनको कोई मनुष्य दिखाई देता है तो पशुओं की तरह उसको भी मारके खा जाते हैं तो शिक्षा से इन्सान, इन्सान बनता है अब उस शिक्षा को ही दूर हटा दोगे जो इन्सान बनाती है, जो देवता बनाती है, जो धर्मात्मा बनाती है, जो मानवता पैदा करती है, जो वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव लाती है तो फिर बताओ आप कैसे संसार में शान्ति फैलेगी। तो सबसे बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हमें अपनी संस्कृति की जो विशेषताएं हैं उससे दूर किया गया आज भी दूर ही हैं। तो ये जो मूर्ति पूजा वाला जो एक प्रकार से ये जो बीच में परम्परा गलत चल पड़ी है ये वास्तव में गलत है इससे परिवारों में, समाज में सब जगह आदमी दुखी होता है क्योंकि जैसे-जैसे वो जड़ मूर्ति की पूजा करता है वैसे-वैसे उसकी बुद्धि भी जड़ जाती जाती है। अब ये इस मूर्ति में इस प्रतिमा में प्रतीक है बनाने वाले ने बड़ी बुद्धिमत्ता पूर्वक इसको बनाया है और इसलिए बनाया कि इसमें जो मैं संकेत कर रहा हूँ इस मूर्ति के संकेतों को देखकर आदमी अपने जीवन का निर्माण करेगा। अब अपने घर के अन्दर शिवजी की प्रतिमा रखो किसने मना किया है लेकिन उस प्रतिमा में जो संकेत हैं उन संकेतों के अनुरूप अपने जीवन का निर्माण करो। उसपर फूल-मालाएं चढ़ाओ, अगरबत्ती घुमाओ, मावा-मिष्ठान खिलाओ, ठीक है, ऐसे ही सरस्वती की प्रतिमा अगरबत्ती लगाने के लिए, माला चढ़ाने के लिए नहीं है उसके वो जो चित्र में जो संकेत है उसके अनुरूप विद्यार्थी अपने आपको हंस बनाए हम सब हंस बनें उसके संकेत हैं यही उसकी पूजा है।

अब गणेश जी पर चर्चा करते हैं यहां पर भी ऐसे ही कल्याण के संकेत हैं। अरे जो पूजा के आपके जीवन में सुख, शान्ति पाना चाहते हो वो इनमें जो संकेत हैं उन संकेतों के अनुसार जीवन का निर्माण करोगे तो चुटकियों में वो जीवन में शान्ति मिल जायेगी, सुख मिल जायेगा, सारे वैभव आपके जीवन में, आपके घर में आ जायेंगे। पर जीवन को वैसा तो बनाओ आप और वैसे आप पूजा और ये लड्डू और ये सब आप खिलाते रहो इनके नाम से दुनिया को कभी कोई सुधार नहीं होने वाला। तो यहां पर ये संकेत किया जा रहा है देखिए अब इसपर विचार करते हैं हम। गणेश जो नाम है तो लोग कहते हैं कि ये तो वेद से आया है क्योंकि वेद में भी एक मन्त्र है, ठीक है तो उस मन्त्र के आधार पर कहते हैं कि ये तो गणेश जी की चर्चा तो वेद में भी है। लेकिन वहां गणपति जो शब्द

आया है, ठीक है उस गणपति शब्द का अर्थ है कि परमात्मा, परमात्मा गणों का ईश है। गणपति गणों का स्वामी है। गण कहते हैं समूह को और संसार में जितनी भी चीजें हैं वो सब समूहों में बंटी हुई है। वो समूह क्या है, सत्व, रज और तम ये तीन परमाणु हैं असंख्य हैं इनसे ही सारी की सारी दुनिया की सारी चीजें बनी हुई हैं। तो जो इनपर जिसका अधिकार है जो इनको जानता है कि कितने परमाणु से क्या बना हुआ है, कैसे बना हुआ है, किसमें कितना, किसमें कितना मिला हुआ है, ठीक है जैसे आप किसी के रंग की मात्रा कम किसी की ज्यादा करके अलग-अलग रंग बना लेते हैं, ठीक है कम-ज्यादा मात्रा में डालकर आप मिष्ठान बना लेते हैं, अन्न डालकर, जैसे कम-ज्यादा मात्रा में डालकर आप नाना अलग-अलग रंगों की या अलग-अलग डिजाइन के कपड़े बना लेते हैं। तो बात यह है कि जो इन तत्वों को जानता है वो व्यक्ति गणेश है। हमारे शरीर में भी समूह है क्या समूह है ये पूरी प्रकृति एक समूह है। ये तो प्रतीक है यहां से आपको प्रतीकात्मक ढंग से सोचना होगा। ऐसा व्यक्ति कहीं दुनिया में है नहीं ऐसा व्यक्ति जिसका सिर हाथी का हो, जिसका शरीर मनुष्य का हो ये भी एक दन्तकथा है जो चली आ रही है कि एक समय शिवजी महाराज जो विज्ञान के युग के महाराजा थे और जो ऋषि थे, ऋषि उन्हें कहते हैं जो साक्षात् कृते धर्मा होते हैं जो सत्य को साक्षात् जानते हों, ऐसे महान्, विद्वान व्यक्ति थे, कैलाश के राजा थे, बहुत औषधीयों को जानते थे, बहुत प्रतिभा सम्पन्न और दूरदर्शी थे, बहुत शक्तियों से सम्पन्न थे, विभूतिशाली, विभूतिवान थे। बोले एक समय की बात है उनकी पत्नी स्नानागार में नहा रही थी तो नहाते-नहाते उसके मन में आया कि मैं अपने द्वार पर एक द्वारपाल खड़ा कर देती हूँ ताकि सीधा घर में कोई न आए। तो वो नहा रही थी तो उसने शरीर से मैल उतारा और उस मैल से ही उसने गणेश जी बना दिए अब जरा ये सोचने की बात है कि किसी स्त्री के शरीर में इतना मैल उतर सकता है क्या कि उससे एक बच्चा बन जाए। ये सृष्टिक्रम के विरुद्ध बात है, सृष्टिक्रम यानि जिन नियमों से इन्सान का शरीर बनता है उन नियमों के विरुद्ध बात है आज नियम के विरुद्ध जाकर हम एक कील नहीं बना सकते। भई कील लोहे से बनती है और मिट्टी से बनाकर बता दो, कील लोहे से बनती है आप पानी से बनाकर बता दो, कील लोहे से बनती है आप हवा से बनाकर बता दो, जो चीज जिससे बनती है जो जिसका कारण है उसी से कार्य का निर्माण होता है। हां गागर आप स्टील की बना सकते हो, गागर आप सोने की बना सकते हो, गागर आप आप मिट्टी की भी बना सकते हो, ठीक है लेकिन गागर आप

पानी की नहीं बना सकते, गागर आप हवा से नहीं बना सकते। बात ये है तो इसलिए ये बात समझने की आपकी पार्वती ने अपने शरीर का मैल उतारा गणेश जी बना दिए भई कैसे बना दिए, कैसे बन जाएगा गणेश जी, बच्चा कैसे बन जाएगा अब उसके शरीर में इतना मैल आया कहां से पहली बात तो। अब जो बच्चा जन्म लेता है बच्चे का भी कम से कम ढाई-तीन किलो तो वजन होता है, उस बच्चे का भी ढाई-तीन किलो तो वजन होता है अब ढाई-तीन किलो वजन एक मनुष्य के शरीर में मैल के रूप में इतना मैल किसी मनुष्य के शरीर से निकल सकता है। इतना तो जन्म से आदमी नहीं नहाया हो न जन्म से लेकर तब भी नहीं निकलता और वो तो इतने बड़े महान विद्वान की पत्नी थी उसकी शरीर से इतना बड़ा मैल ये कैसी मूर्खता पूर्वक बात है। हम सोचते नहीं दिमाग ही नहीं लगाते झट से मान लेते हैं। मूर्ख में और बुद्धिमान इन्सान में क्या अन्तर रहता है यही तो अन्तर रहता है बुद्धिमान ये सोचता-विचारता है चीजों को तर्क के तराजू पर तोलकर स्वीकार करता है। ऐसे ही नहीं आंख मूंदकर के मान लेता है। बोले जी पार्वती जी ने अपने शरीर से मैल उतारा और उसे गणेश जी बना दिए और उसमें प्राण प्रतिष्ठा कर दी। ये आज तक ये उसी प्राण प्रतीष्ठा के नाम से तो इतना घपला हो रहा है दुनिया के अन्दर। वो सोमनाथ के मन्दिर को जो लूटा गया हजारों पण्डितों को गाजर-मूलियों की तरह काटा गया और उस मूर्ति को तोड़ा तो उसमें हीरे-जवाहरात निकले और ऊपर-नीचे चुम्बक लगी थी उस चुम्बक के कारण से जो आकर्षण बल पर वो बीच में टिकी हुई थी बोले नहीं ये तो भगवान शिव की करामात है और गण आयेंगे और दुष्ट को मार भगायेंगे। कौन से गण आये गजनी ने सबको गाजर-मूलियों की तरह काट दिया। तो सोचते-विचारते नहीं तो यही तो होता है और आज भी उसी रास्ते पर चल रहे हैं पूरी दुनिया लगभग। हम दिमाग का प्रयोग नहीं करते भगवान ने दिमाग दिया है। अब यदि यही बात है तो फिर हम बच्चों से क्यों काम करवाते हैं हम कभी कोई काम नहीं भगवान से भी करवा के देख लें। हम अपने मां-बाप हमारे लिए कितनी मेहनत करते हैं हमें पाल पोस कर बड़ा करने में और जरा सा कष्ट होता है तो हॉस्पिटल ले जाते हैं, डॉक्टर के पास ले जाते हैं दिखाते हैं चिकित्सा करवाते हैं आप किसी मन्दिर का कोई पुजारी हो वो बीमार हो जाता है कभी भगवान ने उसको गोली लाकर दी है, एक टेबलेट दी, उसको पानी पिलाया हो, किसी मूर्ति ने उसको पानी पिलाया हो चाहे वो मर जाए। अब बोले गणेश जी ने दूध पी लिया ये सब फालतू बातें उड़ाई हुई हैं। गणेश जी दूध कहां से वो संगमरमर की मूर्ति थी सफेद

ठीक है दूध भी सफेद होता है जो डालते थे दिखाई नहीं देता था उसके अन्दर चला जाता था गढ़वा था और नीचे नाले से निकलकर पीछे निकल जाता। वे गणेश जी दूध कहां से पीएंगे और तब से अब तक कोई आदमी जीवित रहा है क्या और जीवित रहता है तब से तो फिर इनके पिताजी भी जीवित रहते मिलते कहीं पर, राम मिलते हैं कहीं पर, कृष्ण मिलते हैं कहीं पर, उस दुनिया के लोग अभी मिलते हैं कहीं पर। सबके शरीरों का एक वक्त था एक समय—सीमा थी। उसमें पैदा हुए और मर गए, जो महापुरुष थे उनकी सदगति हुई और उनको मोक्ष मिल गया जिनकी नहीं हुई वो कहीं दूसरी योनियों में होंगे। तो जिन बातों को राम मानते थे, कृष्ण मानते थे, शिव मानते थे सारे ऋषि—मुनि मानते थे उन बातों को हम नहीं मानते हम अपने मन की चलाते हैं। सजीव इन्सान सजीव होता है और मूर्ति जड़ होती है, जड़ होती है अब उसमें प्राण फूंकेंगे तब भी उसमें प्राण तो नहीं आयेंगे और कोई मरे हुए प्राणी में प्राण फूंककर उसे बचाकर तो दिखा ले आज दिन तक प्राण प्रतिष्ठा कराने वाले हजारों—हजारों जो पण्डित हैं, ठीक है उन्होंने किसी मरे हुए व्यक्ति में प्राण प्रतिष्ठा करके उसे जीवित किया है, हो ही नहीं सकता, पर चालाकी पूर्वक, षड्यंत्र पूर्वक किसी आदमी को कोई मरे नहीं उसको मन्त्र फूंककर जीवित करके बता दे, ठीक है तो कोई नियम पर दिखाये ये नियम नहीं है, ठीक है। अपवाद में यदि मान लो किसी की आत्मा वापिस भी लौट आती है अपवाद में अरबों—खरबों लोगों में यदि ऐसा हो जाए कि किसी के प्राण निकल गये ऐसा लग रहा है सबने कह दिया मृत घोषित कर दिया और बाद में अचानक शरीर में चेतना आ जाती है वो एक अपवाद है लेकिन नियम में ऐसा कहीं होता है कि दस—बीस जगह ऐसी घटना घटी हो कि प्राण फूंक दिये और उसमें चेतना आ गई। चेतना तभी आती है जब आत्मा होती है और भगवान का बनाया हुआ शरीर होता है मनुष्य ने बनाया है ये शरीर। अब उसमें शरीर के उतरे हुए मैल में कहां से चेतना आएगी और मूर्त उसकी वो बच्चा बना दिया अब बताओ उसके हाथ में शस्त्र भी दे दिए और उस छोटे से बच्चे में दिमाग भी आ गया कि वो दरवाजे पर बैठेगा और उसकी माँ की रक्षा करेगा और शस्त्र चलाने का ज्ञान भी उसमें आ गया और बच्चा पैदा होता है तो कितने टाईम तो वो पैरों पर चल ही नहीं पाता है पर इन्होंने तो चलने वाला, खेलने वाला पैदा कर दिया, मैल से बना दिया हो सकता है, कभी नहीं हो सकता है और देखो दन्त कथा उसके बाद मतलब भारतवर्ष में मूर्ख बनाने का एक षड्यंत्र है, जो हमारे शास्त्रों में बीच—बीच में आ—आकर लोग मिलावट करते गए और उस मिलावट के अन्दर अन्धकार

में हम सब फंसते गए और आज भी फंस रहे हैं। तो देखो क्या हुआ कि फिर वो शिवजी महाराज आए और वो घर में जा रहे थे तो गणेश बीच में खड़े हुए तो बोले रोक लिया नहीं जाने दूंगा बोले क्यों नहीं जाने दोगे बोले मेरी माता ने कहा है कि अन्दर नहीं जा सकते तो अब इतनी बातें तो शिवजी में भी थोड़ी तो अक्ल होगी भई इससे पूछ ले ये कौन है, पूछा बोले कि मैं इनका बेटा हूँ अब स्वाभाविक बात है आश्चर्य होगा भई बेटा कहां से आ गया पिता को ही पता नहीं है और बेटा कहां से आ गया पत्नी को, ठीक है। तो ऐसे में इतनी सी बात पर शिवजी ने त्रिशूल चला दिया और उसकी गर्दन काट दी क्या और इतने देवताओं पर देवता आ गये पहले लड़ने के लिए सारे हार गये कमाल की बात है कैसी मूर्खतापूर्वक कहानी है। सारे देवता हार गये और इतने देवता उसे समझा नहीं सकते उस बच्चे को जब उसके अन्दर द्वार पर रक्षा करने का ज्ञान उसकी माता ने दे दिया मान कर चलो थोड़ी देर के लिए तो फिर इतना दिमाग इतने देवताओं में जो उससे समझाने—लड़ने गए जो शिवजी ने भेजा और बाद में शिवजी भी इन सब लोगों में नहीं था। ये जो ऋषि कोटी के महान लोग थे उनके शास्त्र पढ़कर देखो आज कि कितना ज्ञान भरा है, जिसको चैलेंज नहीं कर सकता जो एक—एक बात है, ठीक है तब से लेकर अब तक खरी—खरी है। ये कपोल कल्पित बातें नहीं हैं जिस प्रकार की बाइबल और कुरान में मिलती हैं जो सृष्टिक्रम के विपरीत हैं कि जमीन चपटी है चटाई के जैसी नहीं है ऐसी बात नहीं है ये बातें मूर्खतापूर्वक नहीं हैं ऋषि—मुनियों की, यथार्थ पर टिकी हुई है। तो इस प्रकार का उन महान भावों के ऊपर आरोप लगाना कि पार्वती बहुत बड़ी विदूषी थी वो तो और उसके शरीर से इतना मैल निकला जैसे कि वो रोज नहाती ही नहीं थी और उसमें गणेश जी बना दिए और उसमें प्राण फूंक दिये और शिवजी ने फिर गर्दन काटी और गर्दन काटने के बाद में फिर वो गर्दन वहां से दूसरी जगह जाकर गिरी और बोले फिर क्या बोले की जाओ जंगल में जाओ जब पार्वती रूठ गई तो फिर जाओ जंगल में जिसका पहला सिर मिले उसी का उठा लाओ अब एक बात बताओ सिर यदि चुहिया का मिल जाता तो क्या चुहिया का सिर लगा देते, चींटी का मिल जाता तो क्या चींटी का सिर लगा देते, हाथी का मिला तो हाथी का काटकर ले आए, हाथी के बच्चे का अब शिवजी जैसा व्यक्ति पीछे हमने जिसकी व्याख्या की है, ठीक है ऐसा महान व्यक्ति किसी पशु का सिर कटवाएगा, जो पूर्ण रूप से अहिंसक है वो ऋषि मुनि ऐसी शिक्षा देंगे कि जाकर किसी पशु का सिर काट लाओ कैसी मूर्खतापूर्वक बात है, कथानक है, कहानी है जिसके

आधार पर ये गणेश जी की पूजा होती है। इन्हें शिवजी और पार्वती की संतान बताये जाते हैं और फिर वो काट लाए गर्दन, गर्दन काटकर सिर पर लगा दी अब जरा सोचो आप , जरा दिमाग लगाओ कि बच्चे की गर्दन कितनी सी रहती है और हाथी के बच्चे की गर्दन कितनी रहेगी इतनी बड़ी गर्दन, वो बच्चे की गर्दन से बीस गुना ज्यादा बड़ी होगी, ज्यादा चौड़ी होगी वो उस बच्चे की मांसपेशियां जो गर्दन की है जो नसे, नाड़ियां है उन नाड़ियों के साथ वो टच कैसे होगी, जुड़गी कैसे। अब हाथी तो पशु बुद्धि का है उसमें तो पार्श्व दिमाग है, तो हाथी का दिमाग जब इस आदमी के सिर पर लगेगा तो हाथी के जैसे बुद्धि नहीं होगी क्या जारा सोचिए आप और आप उसकी पूजा कर रहे हो, जिसके ऊपर हाथी का सिर लगाया हुआ है, क्योंकि दिमाग तो हाथी का ही है ना उसमें, उसमें मांसपेशियां, उसमें खोपड़ी वो सारा कुछ तो हाथी का ही है तो फिर उसके अन्दर इतना ज्ञान कहां से आ जाएगा कि वो वेदव्यास महाभारत बोले और वो लिखता जाए। ये सब पाखण्ड है, ये सब भारतीय जनता को, सब भारत देश को इस अन्धकार में, अन्ध विश्वास में डालने के लिए इस नरक के गढ़ों में, दुखों के सागर में डालने के लिए हमारे शास्त्रों में मिलावट है और पुराणों में यही कथा नहीं गणेश जी के जन्म की अलग-अलग पुराणों में अलग-अलग ढंग से कथा है। ये 18 पुराण इस भारत को दुख और नरक के अन्धकार में धकेलने का काम करते हैं।

गणेश जी का एक विज्ञान अलग था बनाने वाले बहुत बुद्धिमान थे इस प्रतिमा को बनाने वाले को सौ-सौ प्रणाम हैं। लेकिन जिसने इस प्रतिमा के साथ में ये पुराण का पाखण्ड जोड़ दिया वो महान धूर्त आदमी है। एक पशु का सिर एक बच्चे पर कैसे फिट होगा क्या उन लोगों में इतना दिमाग नहीं था महर्षि भारद्वाज का विमान शास्त्र पढ़कर देखो उस समय के जो विमान शास्त्रों के निर्माण करने वाले ऋषि-मुनियों के बारे में जानकर देखो। उस समय इतने अद्भुत-अद्भुत शास्त्र थे इतने महान बुद्धि के, विक्षिप्त बुद्धि के व्यक्ति थे जिनका कितना विकसित मस्तिष्क था कि जिन्होंने क्या नहीं किया। सागर पर समुद्र के ऊपर सेतु बांधने वाले, आकाश में उड़ने वाले, विमान बनाने वाले लोग जो न गलते थे, न सड़ते थे, न जिनको कोई नुकसान होता था ऐसे धातुओं से। तो यहां पर तो हाथी का सिर तो इस बच्चे के साथ सैट हो ही नहीं सकता, कैसे भी करके नहीं हो सकता। अच्छा एक ओर भी बात हाथी का सिर कैसा होता है, हाथी जो है चार पैर

वाला पशु होता है और उसका सिर झुका हुआ रहता है वो दो पैरों पर खड़ा नहीं चलता मनुष्य की तरह अब उसका सिर यदि गणेश जी को लगायेंगे तो वो कैसे होगा वो सामने देखेगा या नीचे देखेगा, जरा सोचिए और गणेश की गर्दन पर इतना बोझ झिल जाएगा हाथी के सिर का, बच्चे के शरीर से हाथी के शरीर जितना बोझ झिल जाएगा उठा लेगा इसको वो कभी नहीं उठा सकता। अच्छा खाने की व्यवस्था क्या है हाथी तो सूंड से खाता है वो सूंड से पहले उठाता है उसके बाद में उठाकर अपने मुंह में अन्दर रखता है उसकी सूंड और मुंह दोनों अलग है। हाथी के बच्चे को इसके दांत भी आ रहे हैं तो इसको सोने में क्या सुविधा होगी जरा सोचो। और फिर इनकी दो पत्नियां हैं ऋद्धि, सिद्धि। कैसे कल्पना करी जा सकती है कोई स्त्री ऐसे से विवाह कर लेंगी। और तो और उसके बाद में वाहन जो दिया है वो चूहे का दिया है आप कल्पना कीजिए कितना बुद्धि का दिवालापन है यदि आप इसको हकीकत मानते हैं, यदि प्रतीक के अतिरिक्त इसे वास्तविक मानते हैं तो मैं समझता हूँ कि ऐसा मानने वाले व्यक्ति से बड़ा नासमझ कोई नहीं। जो चूहा है, चूहा ज्यादा से ज्यादा 100, 250 ग्राम 300 ग्राम वजन वाला होगा आधा किलो वजन वाला होगा, 1 किलो वजन का मान लो आप, 1 किलो वजन पर यदि इस 100 किलो वजन का एक आदमी बैठेगा उसपर सवारी करेगा तो उस चूहे का क्या हाल होगा वो मर नहीं जायेगा। जैसे रोड पर ट्रक के नीचे चूहे आ जाते हैं तो क्या हाल होता है उनका रोड के जैसे चपटे हो जाते हैं। तो इतना बड़ा, भारी शरीर वाला आदमी चूहे पर सवारी कर सकता है, यात्रा कर सकता है, घूम-फिर सकता है क्या। पर हमने दिमाग को खूंटी पर टांग रखा है हम अक्ल का प्रयोग नहीं करते। हमारे लिए तो बाबा वाक्य प्रमाण है कि जिन्होंने जैसा बोल दिया हमने स्वीकार कर लिया दिमाग का प्रयोग किया ही नहीं। हमारे ऊपर जितने आक्रमण हुए, हमारे ऊपर जिन लोगों ने शासन किया उन्होंने सिवाय हमें मूर्ख बनाने, और सिवाय हमें इस अन्धविश्वास में धकेलने के ओर कोई काम नहीं किया। हमारे यहां तो वो आदमी पैदा होते थे जिनका नाम विष्णुगुप्त चणक पुत्र चाणक्य है। यदि उनकी बुद्धि को देखना है तो कौटिल्य अर्थशास्त्र पढ़कर देखो। हमारे यहां तो महर्षि मनु जैसे महा मनस्वी पैदा होते हैं मनुस्मृति पढ़कर देखो। हमारे यहां तो महर्षि चरक जैसे मुनि पैदा होते हैं चरक संहिता उठाकर आयुर्वेद का शास्त्र देखो। वाग्भट्ट, बाणभट्ट, वराहमिहिर जैसे महापुरुष होते हैं उनके शास्त्र उठाकर देखो। हमारे यहां पाणिनी, पतंजलि जैसे महापुरुष होते हैं उनके व्याकरण के शास्त्र उठाकर देखो उनकी बुद्धि की थाह पाकर

देखो। हमारे यहां कपिल, कणाद, गौतम, जैमिनी, वेदव्यास, वात्स्यायन ऐसे महापुरुष होते हैं, उनके शास्त्र पढ़कर देखो। हमारे यहां उपनिषदों को, महर्षियों को पढ़कर देखो इतने बुद्धिमान तेजस्वी दिमाग के लोग होते थे। इस प्रकार की मूर्खता हमारे यहां के लोग करेंगे लेकिन कैसे मूर्ख बनाया जाए जनता को पहले तो हमारे हाथ से, पहले तो हमारा नालन्दा विश्वविद्यालय जो विद्या का मूल केन्द्र था, तक्षशिला उन सबको ध्वस्त किया गया। ताकि शिक्षा ही नहीं मिलेगी तो व्यक्ति शिक्षित कहां से होगा। ज्ञान के बिना मनुष्य और पशु में कोई अन्तर नहीं है और वहीं हमारे साथ में हुआ कि इनके हाथ से पहले इनके ज्ञान का स्रोत खींच लिया जाए तो यहां कोई चाणक्य, चन्द्रगुप्ता पैदा नहीं होगा, यहां कोई दयानन्द पैदा नहीं होगा, यहां पर कोई ऋषि, महर्षि, महापुरुष कोई प्रतिभाशाली राम, कृष्ण, सीता और रुक्मणी पैदा नहीं हुई। यहां पर कोई राम, लक्ष्मण को पैदा करने वाली ऐसी माताएं और ऐसे पिता पैदा नहीं हुए। लव-कुश को पैदा करने वाले राम-सीता पैदा नहीं हुए तो उत्तम सन्तानें होनी। तो हमारी तो पूरी परम्परा की बुद्धि को ही जड़ करने का षड्यंत्र किया गया और उसके तहत हम सभी इसी कुचक्र में फंसे रह गए और आज भी हम उसी अंधेरे में डूबे हुए हैं। जो प्रतीक थे उनको हम भगवान, ईश्वर मान बैठे जिनसे प्रेरणा लेनी थी आंख बन्द करके हम उनके ऊपर पूजा और पुष्प चढ़ाने लग गए और उनसे अपने कल्याण की आशा रखने लग गए इसके कारण हमने न जाने कितनी सारी पराजय, कितना सारा अपने देश का गौरव, अपने देश का पतन, अपने देश का विनाश किया और आज भी हम उसी अन्धकार में चले जा रहे हैं तो हमें वस्तु को यथार्थता में देखने की आवश्यकता है। तो यहां ये जो मूर्ति हैं ये एक प्रतीक हैं देखिए इसके हाथ में देखिए एक हाथ में अंकुश है और दूसरे हाथ में चाबुक है अब ये अंकुश और चाबुक गणेश जी के पास में किस काम का है आप ही बताओ जरा सोचो दिमाग लगाओ एक तो इतना बड़ा आदमी चूहे पर नहीं बैठ सकता चूहे पर बैठेगा तो चूहा बैठते ही मर जाएगा और ये अंकुश चूहे पर तो काम करेगा नहीं और ये चाबुक चूहे पर काम करेगा नहीं। अंकुश कहां काम आता है हाथी के यहां, महावत के हाथ में अंकुश होता है, महावत हाथी को काबू में अंकुश से करता है, हाथ में जो छोटा सा चाबुक है वो हाथी पर मारने के लिए है ये जो अंकुश है ये किसलिए है अच्छा इसकी पूजा करके मिलेगा क्या आपको बताओ। अब कल्पनाओं में पूजा करके मानलो कि हमारा काम हो जाएगा तो अब तक जैसे बैठे थे आप भी बैठे रहो हजारों, लाखों की मन्दिरों में भीड़ लगती है एक आदमी का उसके कर्मों के कारण से काम

होते हैं और वो हजार लोगों में प्रचार करता है और जिनके नहीं होते वो घर जाकर बैठ जाते हैं। प्रचार करने वालों को लोग खरीद कर रख लेते हैं लोगों को पता लगा रे मन्दिरों में तो बहुत इन्कम है तो वो देख लोगों में अमेरिका लोगों ने भी, अमेरिका वालों ने भी जगह-जगह दूसरे देशों के लोगों ने आपके मन्दिर बनाना शुरू कर दिया बोले ये तो मूर्ख हैं इनमें अक्ल नहीं है, तो इनसे इस ढंग से कमाई करो और वही हो रहा है। आस्था के नाम पर अंधकार में धकेला जा रहा है और हम इस सुन्दर और आनन्दमय जीवन जो प्रभु ने दिया है, जो इस विधाता ने अद्भुत इस सृष्टि की रचना की है उसने जो इस संसार को जीने के लिए शास्त्र दिए हैं उन शास्त्रों को हम पढ़ नहीं रहे हम बस मिट्टी की मूर्तियों के आगे सर पटक रहे हैं जिस विधाता ने हमें इतना सुन्दर शरीर बनाकर दिया है उसने इस शरीर को कैसे जीना चाहिए ये भी बताया और हजारों-हजारों ऋषि-मुनियों उनके शास्त्र इस बात को एक-एक सूत्र, एक-एक मन्त्र, एक-एक श्लोक के अन्दर कह रहे हैं लेकिन हम उनकी पीड़ा को, उनकी बातों को नहीं पढ़ते, उनपर विचारते नहीं। अपना देश तो वो देश था इसको तो पारस पत्थर कहा जाता था बोले जो भी यहां आता था वो भी कुन्दन बन जाता था। अपना देश तो वो जिसको सोने की चिड़िया, यहां तो सोना भरपूर था कोई कमी नहीं थी, अन्न-धन की तो कोई कमी ही नहीं थी। कहते हैं पूरे भूगोल पर, पूरी पृथ्वी पर भारत से सुन्दर कहीं कोई देश नहीं। लेकिन आज की हालत देखो तो इसलिए आज जरूरत है कि हम ऋषि-मुनियों की पगडंडियों पर चलें तो जिस बुद्धिमान महापुरुष ने इस प्रतिमा को बनाया है इस प्रतीक को बनाया है कि इसके माध्यम से हम अपने जीवन को समझें उसके पदचिह्नों पर चलने की जरूरत है। फिर देखो चुटकियों में, दिनों में आपको सफलता न मिले तो फिर कहना कि आपने ये क्या कहा?

देखिए, आईये अब हम इसपर विचार करते हैं। जो गणेश वो व्यक्ति एक अबोध बालक है उस बालक के पास में ज्ञान नहीं है उसका गणेश नाम इसलिए रखा कि वो समूह का ज्ञाता बने गणेश – गण + ईश- गणों का स्वामी। गण क्या है गुणों से बनी हुई जो भी सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण से बनी हुई ये जो सारी की सारी सृष्टि है ये समूह के रूप में बनी हुई है। सबसे पहले भगवान ने सत्वगुण का जो समूह था, रजोगुण का जो समूह था, तमोगुण का जो समूह था उनको बिलोया जैसे आप छाछ को बिलोते हैं। भगवान ने अपने ज्ञान से, अपने बल से, उन सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण ये जो असंख्य

गुण थे, असंख्य जो अविभाज्य कण थे, परम अणु, परमाणु थे, जिनके दो भाग नहीं किए जाते उनको अविभाज्य कण बोलते हैं ऐसे जो परम सूक्ष्म जिन्हें केवल परमात्मा जान सकता था ऐसे जो प्रकृति के सत्त्वगुण, रजोगुण, तमोगुण थे विधाता ने उन सबको ज्ञानपूर्वक जैसे सारी दुनिया में सारी चीजें विधाता ने ज्ञानपूर्वक बनाई है सब जगह बुद्धिमत्ता हमें दिखाई देती है एक-एक चीज में तो ज्ञानपूर्वक विधाता ने सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुणों के अन्दर क्रिया, उनको बिलोया, उनको हिलाया, उनको घुमाया जैसे बगुलिया जैसे हवा का एक गोल तूफान बनता है आकाश में उड़ता हुआ दिखाई देता है पूरे परमाणु को विधाता ने घुमाया और उनको घुमाकर उन गुणों को घुमाकर उनसे महत्त्व एक पिण्ड बनाया। जब उनमें आपस में रगड़ पैदा हुई तो उनसे एक दिव्य महान पिण्ड बना, महान अण्ड बना, उनसे एक महान पिण्ड बना जिसको हिरण्यगर्भ कहा जाता है। एक दम चमचमाता हुआ विधाता ने उसी में से अलग-अलग चीजें बनाई उसी में से सारी सृष्टियों का, आकाशगंगाओं का, सब सौर परिवारों का, सबका निर्माण भगवान ने किया। उसी में से भगवान ने समष्टि तत्व बनाया, समष्टि बुद्धि तत्व बनाया, उस महातत्व से फिर समष्टि बुद्धितत्व से भगवान ने असंख्य प्राणियों के जितने भी जीव देहधारी उनके हिसाब से असंख्य बुद्धितत्व बनाए। व्यष्टि सबको एक-एक दिये और निरन्तर बनता रहता है, चलता रहता है जैसे बहुत सारा आटा हो उसमें से जब जो चाहे बना लो आप, तो जैसे आपका डाटा आपके फोन में भी है और गूगल के पास में भी है आप यहां जो भी करोगे उनको सब पता है जिससे आपने डाटा ले रखा है कि आप इसमें क्या-क्या देख रहे हो। आपका सब पता है हम जो भी यहां यन्त्रों से शरीर में जो यन्त्र हैं उनसे जो भी करते हैं विधाता को सब पता है। एक हमारा व्यष्टि बुद्धितत्व है दूसरा समष्टि बुद्धितत्व है तो सबका सार्वजनिक है और उसपर विधाता का नियन्त्रण है तो यहां हम जो भी करते हैं सबका वहां संकेत जाता है। अब जैसे आपका जल्दी ही डाटा खत्म हो गया आप पूछोगे जी जल्दी ही डाटा खत्म हो गया तो वो बता देगा कि आपने ये-ये देखा ठीक है वो बता देगा कि इतने दिनों में ये-ये देखा क्योंकि आप जो भी देख रहे हो सब सूचना वहां जा रही है हम जो भी कर रहे हैं सब सूचना वहां जा रही है। सबकुछ टाईप हो रहा है मानो सरलता से ऐसे समझो फिर भगवान ने उस महातत्व से बुद्धितत्व बनाया और उस समष्टि बुद्धितत्व से समष्टि अहंकार बनाया और समष्टि अहंकार से फिर विधाता ने हम सबके लिए व्यष्टि अहंकार बनाया और फिर वो समष्टि अहंकार से ये बनाया और उसका तो सात्विक

अंश था, सात्विक और राजसिक अंश था उन दोनों से मिलाकर उसने मन बना दिया। जो सात्विक और राजसिक दोनों गुण वाला होता है। तो सात्विक अंश से भगवान ने ज्ञानेन्द्रियां बनाई और जो राजसिक अंश से भगवान ने कर्मेन्द्रियां बनाई। और दोनों का राजा मन जिसमें दोनों जिसमें राजसिकता भी है और जिसमें सात्विकता भी है। दोनों गुणों वाला सत्वगुण और रजोगुण वाला मन बना दिया इसलिए उसको उभयेन्द्रिय कहा और उसके बाद में विधाता ने फिर अहंकार के तामसिक अंश, समष्टि तत्व से व्यष्टि पंच तन्मात्राएं बना दी जो हमारे शरीर में हमारे सूक्ष्म शरीर का खोल है और वो सर्वत्र उन्हीं फिर तन्मात्राओं से फिर भगवान से सृष्टि बना दी। खैर वो विषय है नहीं विषय तो यह है। तो बात ये है कि इस प्रकार से विधाता ने जो भी चीजें बनी सब समूह के रूप में है। आपका मन सूक्ष्म सत्व और रजस अहंकार के जो सूक्ष्म कण हैं, परमाणु हैं वो अहंकार तत्व और अहंकार के राजसिक तत्व और अहंकार के सात्विक तत्व से आपका मन बना। वो भी सूक्ष्म प्रकृति के परमाणुओं का समूह जो ऊर्जा रूप में है, जो आभा रूप में है, तेज रूप में है, जो संकोच और विकास स्वरूप वाला है, जो सिकुड़ता और फैलता है, तो शरीर में ऐसे ही बाकी सब चीजों को विधाता ने बनाया है। तो ये जो शरीर के अन्दर तो तत्व काम करते हैं बुद्धि, अहंकार, मन, ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेन्द्रियां, पंच तन्मात्राएँ, पांच प्राण, स्थूल भूत ये सारे जो काम करते हैं ये चोबीस तत्व ठीक है तो इनके समूह को जानने वाला जो आदमी है न वो गणेश है। वो हम भी बन सकते हैं आप भी बन सकते हैं। जो इन गणों को इन समूहों को जानता है वो गणेश है और ऐसे ही बहुत सारी चीजें हैं शास्त्रों में जो बताई है जो समाधि के द्वारा ईश्वर को जानने से पहले जो सारी चीजों को, प्रकृति की चीजों को जाना जाता है। अब विज्ञान उस बात को तल तक पहुंचने के लिए कैसा अद्भुत बनाया है इस प्रतिमा में जो सृजन किया है इसके पीछे बैठकर। हाथी अब हम कहते हैं कि भैंस बड़ी या बुद्धि हम कहते हैं जी बुद्धि बड़ी क्योंकि भैंस तो बहुत बड़ी है फिर आप कहते हैं कि बुद्धि बड़ी क्योंकि भैंस में अक्ल नहीं होती सौ बछड़ों के बीच में अपने बछड़े को नहीं पहचानती वो इसलिए हम कहते हैं न कि बोले इसकी बुद्धि तो भैंस बराबर है। भैंस का दूध पी-पीकर तो इसकी बुद्धि भैंस जैसी हो गई। इसलिए कहा हाथी, हाथी पर काबू कैसे पाया जाता है अंकुश के द्वारा। महावत हाथी को अपने काबू में अंकुश से करता है। तो यहां गणेश कौन व्यक्ति है और सिर किसका प्रतीक है, माइण्ड, दिमाग किसका प्रतीक है जिसमें सारा सिस्टम शरीर को चलाने वाला रहता है जिसमें हमारा मन रहता

है, हमारी बुद्धि, हमारी ज्ञानेन्द्रियां सबके केन्द्र रहते हैं जो हमारे शरीर का हैड ऑफिस जो मस्तिष्क है वो हमारा सिर है तो यहां इस बात को दिखाया गया है कि हाथी के जैसा मानो शरीर हो, हाथी के जैसा मानो सिर हो, मतलब जीवन हो। हाथी के समान जैसे हाथी को महावत इस अंकुश के द्वारा अपने वश में करता है अंकुश किसे कहते हैं बुद्धि को, अंकुश किसे कहते हैं, ज्ञान को, हमें बुराई की ओर बढ़ने से कौन रोकता है, ज्ञान रोकता है, विवेक रोकता है तो ये अंकुश विवेक का प्रतीक है हम ये बोलते आ रहे बुद्धि का थोड़ा, विवेक का अंकुश तो लगा इस बात पर थोड़ा सोच विचार कर तो देख इस बात पर, तो ये जो अंकुश है ये विवेक है तो जैसे हाथी को अंकुश से अपने कब्जे में किया जाता है उस पर नियन्त्रण पाया जाता है उसको अपने वश में किया जाता है और उसका जो भारी भरकम शरीर है इतना बड़ा जो शरीर है हाथी का वो सारा शरीर पूरा हाथी इस छोटे से अंकुश के कब्जे में आ जाता है इसके अधिकार में आ जाता है छोटा सा अंकुश इतने बड़े हाथी को अपने कब्जे में कर लेता है। ये बात कह रहे हैं तो इस मस्तिष्क में जो बुद्धि है वो बुद्धि ये जो इतना बड़ा मनुष्य शरीर है, इतना भारी शरीर है इस सारे शरीर को ये बुद्धि अपने अनुसार चलाने में सक्षम है। बुद्धि के अंकुश लगने से आदमी गलत राह पर जाने से अपने आपको रोकता है, अपने पदों पर, अपने पावों पर विराम देता है तो यहां पर हाथी का जो सिर दिखाया गया उसका मतलब ये है कि जैसे मनुष्य का जीवन है, मनुष्य का जो शरीर है जिस प्रकार से एक अंकुश से हाथी वश में आ जाता है तो मनुष्य का जो शरीर है, शिर है तो इसपर यहां पर गणेश जी का जो शिर है यहां पर ये हाथी का सिर लगाया है और हाथ में साथ में अंकुश दे दिया तो यहां पर ये है कि तुम्हारा यदि दिमाग, तुम्हारा यदि शरीर मानकर चलो कि हाथी के जैसा हो और फिर भी तुम्हारी बुद्धि इस अंकुश के समान हुई तो इस शरीर पर तुम काबू में ला सकते हो। कई लोग नहीं कहते कि मेरा तो मेरे शरीर पर काबू नहीं है और आप इसे जीवन में अनुभव करके देखो आदमी का अपनी आंखों पर काबू होता है क्या जो नहीं देखना चाहिए उसे देखता है कि नहीं देखता। जिससे सुनना नहीं चाहिए उसे सुनता है कि नहीं सुनता। जिसे छूना नहीं चाहिए परिस्थितियां ऐसी हो तो छूता है कि नहीं छूता। जो काम गलत करना नहीं चाहिए करता है कि नहीं करता कोई नहीं देख रहा हो तो। तो वहां पर तुम्हारी बुद्धि का अंकुश काम करेगा। ये हाथी के जैसा जो शरीर है इस शरीर पर, इस जीवन पर, इस शरीर में जो दसो इन्द्रियां हैं दसो द्वार हैं जहां से ये मन, ये बुद्धि इस आत्मा को भटकाते हैं ये जो

इन्द्रियों के दस घोड़े हैं ये दशों विषयों में जो विचरण कर रहे हैं और ये आत्मा को इस शरीर रूपी रथ पर बैठे इस आत्मा को भटका रहे हैं इधर—उधर विषयों में ले जा रहे हैं बोले बुद्धि का इस पर अंकुश रखना। जैसे हाथी अंकुश से वश में हो जाता है वैसे बुद्धि से ये मनुष्य की अनियन्त्रित भावनाएं और इसके अन्दर की ये कुत्सित इच्छाएं सब नियन्त्रण में आ जाती हैं। जीवन की सारी आपाधापी, सारा असन्तुलन एकदम सन्तुलित हो जाता है जब आदमी बुद्धि का प्रयोग करता है। जैसे हाथी अंकुश से वश में आता है वैसे मनुष्य बुद्धि से वश में आता है और वो बुद्धि कैसी हो उस बुद्धि का क्या करे आदमी बोले उसपर हमेशा बैठा रहे तभी तुम गणेश बनोगे जैसे चूहे पर को गणेश को बैठा दिया जैसे चूहा गणेश जी का वाहन बना है और चूहा यहां बुद्धि का प्रतीक है बुद्धि क्या करती है कुतर—कुतर, हमेशा किसी न किसी काम में लगी रहती है। मन इधर—उधर विचारों पर चलता रहता है तो बोले गणेश कब बनोगे यानि जो चोबीस तत्व है प्रकृति के जिनको जानने से आत्मा का ज्ञान होता है, जिनको जानने से आत्मा तक पहुंचता है, आत्मा को जानकर परमात्मा का द्वार खुलता है, परमात्मा को जानता है जिसमें इस मनुष्य जीवन की पूर्ण सफलता है पूर्ण साफल्य है उस तक पहुंचने के लिए क्या करना होगा बोले ये जो मूषक है, ये जो बुद्धि है ये निरन्तर जो ज्ञान की राह पर निरन्तर शास्त्रों को पढ़ने में निरन्तर इस दुनिया को देखकर विचारने में जो लगी है जैसे चूहा कुतर—कुतर करता है वैसे इस संसार में जो विविधताएं, जो नियम हैं, जो व्यवस्थाएं हैं, इनको जानने में जो कुतर—कुतर लगी हुई है, निरन्तर जो बुद्धि चल रही है आप अपनी बुद्धि को देखते हो न हमेशा चिन्तनशील रहती है, कुछ न कुछ करती रहती है। तो ऐसे जो बुद्धि की जो आदमी की जो बुद्धि है जो कुछ न कुछ कर रही है बोले इसपर आदमी हमेशा सवार रहे बुद्धिपूर्वक काम करे, बुद्धिपूर्वक चलें, बुद्धिपूर्वक देखें, बुद्धिपूर्वक सुने, बुद्धिपूर्वक खायें, बुद्धिपूर्वक पहने, बुद्धिपूर्वक बात करें, बुद्धिपूर्वक जायें, बुद्धिपूर्वक आयें, बुद्धिपूर्वक जीवन को जीयें और बुद्धि पर ज्ञान का अंकुश रखें। ये जो हाथी की खोपड़ी है, ये जो आदमी की खोपड़ी है इस खोपड़ी पर अंकुश, अन्दर जो इन्द्रियों के केन्द्र हैं, दसो इन्द्रियों के केन्द्र हैं, ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेन्द्रियां के खोपड़ी के अन्दर केन्द्र हैं, मन का केन्द्र हैं, मन हैं, बुद्धि है तो बोले इसपर ज्ञान का अंकुश रखें, ज्ञान कहां से मिलता है, शास्त्रों से मिलता है, ज्ञान शास्त्रों से मिलता है तो शास्त्रों के ज्ञान को अंकुश बनायें, और जैसे अंकुश से हाथी वश में आता है वैसे इस ज्ञान से अपनी बुद्धि को उस ज्ञान के कुतर—कुतर में, चिन्तन—मनन में

निरन्तर लगाए रखें और इस बुद्धि पर हमेशा, चूहें पर यानि बुद्धि पर अपने आपको सवार रखें। जब इसपर सवार रखोगे तो उससे क्या होगा बोले जिन तत्वों को जानने के लिए जिन चोबीस, पच्चीस, छब्बीस तत्वों को जानने के लिए आत्मा, परमात्मा और प्रकृति के चोबीस विकारों को, इन छब्बीस को जानने के लिए ये जीवन ये जन्म हुआ है वो उद्देश्य पूरा हो जायेगा और जीवन आपका सफल हो जायेगा। ये तत्व यहां पर खोलकर समझाया गया है तो इस प्रकार से इस प्रतिमा से इस प्रतीक को ग्रहण करके जीवन का निर्माण करना ही यहां पर उद्देश्य है न कि यहां पर आप तभी इसके हाथ में ये लड्डू रखा हुआ है कि वो लड्डू मिलेगा और तभी जो दोनों बाजू जो ऋद्धि और सिद्धि जो इनकी पत्नियां हैं पत्नी कहते हैं **यहपत्नाकार्येति सापत्नी**— जो अपने पति को यानि अपने पालक को पतित होने से बचाती है उसको पत्नी कहते हैं। तो जब आपका व्यक्तित्व गणेश जी के व्यक्तित्व के समान होता तो ऋद्धि और सिद्धि आपके जीवन में आ जायेगी जो आपका सदैव हित करेगी, आपकी सदैव रक्षा करेगी। ऋद्धि यानि विवेक पूर्वक जो समृद्धि है, और सिद्धि यानि कुशलता, चातुर्य, नियन्त्रण, समझ, प्रज्ञा, मेधा, सुमेधा, ऐसी प्रतिभाएं आपके जीवन में आ जायेंगी जो आपको पतित होने से बचायेंगी यहां ऋद्धि, सिद्धि का ये मतलब है न कि कोई औरतें हैं तब यही आदमी नहीं है, तो यहां औरतों को पत्नियां कैसे बताया जा सकता है तो ये यहां तात्पर्य है। तो इस प्रतीक का ये तात्पर्य है न कि इसको आप हर्ष्वर मानें, सृष्टि निर्माता मानें, या महाभारत लिखने वाले गणेश मानें मनुष्य मानें वो कोई समझदारी की बात नहीं है। ये इसका वास्तविक अभिप्राय है। मैं समझता हूँ आप ऐसा इसका चिन्तन करेंगे, मनन करेंगे, तो इसके प्रति जो समाज में अन्धविश्वास फैला हुआ है वो भी दूर होगा और जो भी इस ढंग से इसकी पूजा करेगा जो पूजा से, जो पाखण्ड रूपी पूजा से इसे पाना चाहता है वो इस यथार्थ पूजा से निश्चिन्त दिनों में, महीनों में, सालों में पा लेगा, जीवन उसका बदल जायेगा धैर्य से एक-एक बिन्दु का अच्छे से विचार करें जीवन अवश्य आपका सफल होगा। आज की बैठक को इतना ही रखते हैं आगे फिर अन्य प्रतीक पर विचार करेंगे।

शान्ति पाठ।

